

# भारतीय कला में लोककला का अस्तित्व

उपासना राज

शोधार्थिनी

जैन कन्या पाठशाला पी0जी0 कालेज

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

upasnaraj2015@gmail.com

## सारांशिका

लोक कला जनसाधारण की कला है। प्रत्येक क्षेत्र की एक विशेष कला होती है यही कला वहाँ की लोक कल्याण लोक कला होती है लोक कला की प्रारम्भिक आकृतियों में कला के उसी रूप का ज्ञान होता है जो वर्तमान युग की सुंदर आकृतियों में होता है। भारतीय कला संसार में लोक कला का प्रमुख स्थान हैं यद्यपि यह आकृतियाँ—बेडौल और अनुपात रहित हैं परन्तु इसके पीछे एक भावना छिपी रहती है यह भावना सांस्कृतिक विकास के लिए सदैव हित कर रही है। लोक कला में बोल विशेष देश समाज की सांस्कृतिक भावना अन्तिमिहित है।

**मुख्य शब्द:** लोककला, अस्तित्व, प्रवृत्तियां, संस्कृति, धर्म

### लोककला का अस्तित्व

“लोककला की उत्पत्ति, जादू, टोना, अंधविश्वास, निवारण, अलंकरण, प्रवृत्ति तथा जातिगत भावनाओं से मानी जाती है।”

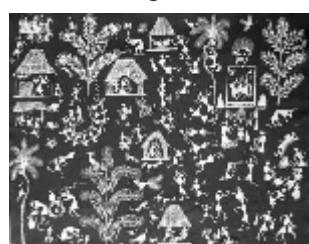
‘जन—जन की जन—जन के द्वारा जन—जन हेतु विस्तृत कला लोककला है’

### लोककला का उदय (जन्म)

पृथ्वी पर जीवन के विकास के साथ—साथ चित्रकला का भी विकास हुआ। मानव आदिकाल से ही पहले प्राकृतिक निर्मित गुफाओं में रहता था बाद में घास फूस के घर बनाने शुरू कर दिए और मानव निरन्तर विकास करता रहा है।



शब्द फॉक की उत्पत्ति एँग्लो सेक्शन थंस से हुई है जर्मनी में यह टंसा के रूप में प्रचलित है फॉक शब्द का संकुचित और व्यापक अर्थ उपलब्ध है संकुचित अर्थ में फॉक शब्द से असंस्कृति और मूढ़ समाज का बोध होता है तथा व्यापक अर्थ में इसका प्रयोग सुसंस्कृत राष्ट्र के सभी लोगों के लिए होता है। इस फॉक शब्द के लिए हिंदी में लोक, जन, ग्राम, तीन शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु लोक शब्द को उपयुक्त माना गया है।



आदिमानव ने अपनी अंकन और विषय वस्तु के द्वारा पत्थर के अस्त्र एवं औजार तथा जीवन यापन के लिए जो औजारों, आभूषणों, घरों, मूर्ति का निर्माण किया उसी ने कला को रूप प्रदान किया ऐसी कला के उदाहरण नर्मदा घाटी, पंचमढ़ी, सिंधनपुर, पहाड़गढ़, भीमबेटका आदि जगहों से प्राप्त हुए हैं।

भारत के अनेक स्थानों पर अनेक चित्र प्राप्त हुए हैं ऐसा माना जाता है कि अपने संदेश को एक दूसरे तक पहुँचाने के लिए गुफाओं की

दीवारों पर गेरू, खड़िया आदि से कुछ टेढ़ी—मेढ़ी रेखाएं खींची जिसने कला का नया रूप लिया आदिमानव अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक प्रकार के चित्र गुफाओं पर उकेरता रहा। प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ गर्मी से बचने के लिए प्रकृति की पूजा आरंभ कर दी धीरे—धीरे धार्मिक भावनाओं में उनकी आस्था



बढ़ती गई जिससे लोग कला का निर्माण हुआ भारत में सभी पर्व पर उसी से सम्बन्धित चित्र सांझी बनाई जाती है भारत में सभी पर्व पर लोक कलाओं का बनाना आवश्यक माना जाता है जिसके पीछे धार्मिक विश्वास है।

### लोककला की प्रवृत्तियां

भारत जैसे एक विशाल देश में जैसे जैसे अनेक क्षेत्रों की अलग—अलग कलाएं विकसित होती गयी लोककलाओं का अनेक भिन्न—भिन्न रूपों में विकास होता चला गया तथा भारत में लोककलाएं अपनी अलग—अलग विशेषता के लिए अलग—अलग रूपों में प्रसिद्धि पाए हुए हैं जो अपनी परंपरा के कारण प्रसारित होती रही हैं।

### लोककला और धर्म

हिंदू धर्म में लोककला का विशेष महत्व है लोक जीवन में व्याप्त सरलता यहाँ की कला में भी देखी जा सकती है। रीति—रिवाज, वेशभूषा, खानपान, अस्थाई तथा धार्मिक विशाल, लोक कथाएं, लोक देवता, मेले, त्यौहार, मनोरंजन के साधन लोककला ही प्राचीन काल से रही है मुख्यतः भारतीय स्त्रियां ही लोक कला का प्रयोग, उपवास,

उत्सव, धार्मिक अनुष्ठानों पर अपने संपूर्ण कुटुंब की मंगल कामना हेतु अनेक मौँगलिक कार्य करती हैं इसके अलावा अन्य धार्मिक उत्सव, पर्वों पर लोककलाओं को निर्मित करने हेतु प्राचीन काल से ही प्राकृतिक और खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता है। तीन प्रकार के रंगों का प्रयोग लोककला में किया जाता है:-

1. प्राकृतिक रंग
2. रासायनिक रंग
3. खनिज रंग

लोककला में शुद्ध तीव्र रंगों का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण लोकचित्र सर्वाधिक आकर्षण तथा ओजपूर्ण होते हैं। हिंदू धर्म में

देवी-देवताओं की मूर्तियों और उनसे सम्बन्धित पर्वों पर होने वाले हर्षोल्लास में कला का विशेष महत्व है घर की दीवारों पर त्योहारों पर अलग प्रकार की चमक दिखाई देती है जिन्हें पर्व पर घर की स्त्रियां घर के आंगन में रोली, हल्दी, खड़िया, गेरु से उसी त्योहारों से सम्बन्धित अलंकरण उकेरती हैं यह अनुष्ठानिक भित्ति अलंकरण पूरे



भारत में उकेरे जाते हैं।

भारत में सभी धर्मों के लोग रहते हैं सभी धर्मों की अपनी—अपनी लोक परम्पराएं हैं प्रत्येक लोककला का अपना एक प्रतीक होता है। कला ने ही धर्म को जन्म दिया है और धर्म ने ही कला को बढ़ावा और धर्म ने कला को जीवित रखा।

### लोककला और समाज

लोक कला मानव से अनन्त काल से ही जुड़ी आ रही है यह कला ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का उल्लेख करती है। लोककला का अर्थ संसार या लोगों से प्रचलित है इस प्रकार लोककला मानव में समाज से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। मानव ने उसे समाज में संस्कृति से जोड़ा और उसमें आरथा बनाए रखी। समाज में व्याप्त समस्त विचार, आदर्श, अनुष्ठान क्रियाएं आदि समिलित रूप भी लोक की संपत्ति है।

“लोक शब्द एवं जातिबोधक शब्द की भाँति प्रतिष्ठित हो गया जिसके अंतर्गत, विश्वास, रीति-रिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावते आदि है विवाह उत्तराधिकार बाल्यकाल तथा प्रौढ़ जीवन के रीति-रिवाज और अनुष्ठान तथा त्यौहार, युद्ध आखेट पशुपालन आदि विषय आते हैं”

गांव में आज भी पुराने तरीके से लोकचित्र भित्ति चित्र उकेरे जाते हैं नवरात्रों में हाथ से दुर्गा, शेरावाली की मूर्तियां बनाई जाती हैं जो आज गाँव तक ही सीमित रह गई है। परन्तु भारत में सभी स्थानों पर लोग चित्र बनाए जाते हैं। बस उनका रूप बदल गया है। इस प्रकार लोक कला समाज के प्रत्येक व्यक्ति धर्म व जाति से जुड़ी है।



लोककला समाज को शक्ति, एकता व शांति प्रदान करती है। समाज में आपसी प्रेम व रिश्ते को कायम करती है।

### भारतीय संस्कृति में लोककला

भारतीय संस्कृति का मानव जीवन के साथ गहरा संबंध जोड़ती हुई लोककला निरंतर सक्रिय रही है। भारतीय संस्कृति परिवेश में लोककला मानव के विकास, उसकी रुचि, अभिरुचि, परम्पराओं, रीति-रिवाजों, स्वभाव संस्कार आदि को परिलक्षित कर आगे बढ़ रही है।

हमारी लोककला आज आधुनिक के युग में भी लोक कला हमारी संस्कृति संस्कारों रस्म परम्पराओं या माटी की गन्ध से समाज को सुर्गाधित करती है। लोककला ने ही संस्कृति को जन्म दिया है लोककलाएँ संस्कृति को प्रभावित करती हैं या कहे कि लोककलाएँ ही संस्कृति को एक नया रूप पथ देती हैं विकसित होने के लिए प्रत्येक देश की लोक कलाएँ वहाँ की संस्कृति का आईना होती है। जहाँ तक भारत की बात है— भारत एक विशाल देश है और उसकी संस्कृति भी उतनी ही विशाल एवं अनोखी है। ग्रामीण अंचल हो या शहरी संस्कृति कण-कण में दिखाई देती है। यहाँ पर जन्म, विवाह, त्यौहार और उत्सवों पर मंगल चिन्ह बनाना बहुत पुरानी परंपरा है। इन प्रतीकों द्वारा हम सब अपने भावों को मंगल कामना को प्रकट करते हैं। नागपंचमी हो, सावन, पूरनमासी, होली, दिवाली, रक्षाबंधन, करवाचौथ, अहोईअष्टमी, भैयादूज, देव उठावनी, नवरात्र त्यौहार पर लोक—कलाओं का प्रदर्शन अपने मन की उमंग को दर्शाने के लिए हम सब करते हैं।

यहाँ इतनी सारी लोक—संस्कृतियाँ हैं और उनमें इतनी विविधता है कि सभी को एक साथ समेटना आसान नहीं है इसलिए अलग—अलग क्षेत्रों की लोक कलाओं और संस्कृतियों की अपनी अलग पहचान है। विविधता होते हुए इन सभी में लोक संस्कृतियों में एकरूपता है।



“हमारे भारत में भारतीय आधुनिक कलाकारों का एक ऐसा वर्ग है जो लोककला को रुचिकर और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है और उनकी आकृतियों में लोक जीवन की मनोवैज्ञानिक अभियक्ति देखने को मिलती है। यामिनी राय, के० एस० कुलकर्णी, पनिकर, पी० टी० रेण्डी लक्ष्मण पै आदि ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।”

मनुष्य का जीवन, समाज राष्ट्र और विश्व को परिवर्तन के रास्ते पर ले जाने वाले तथा व्यक्ति की आत्मिक—समृद्धि को सुनिश्चित करने



वाले अनुशासन, साधना, प्रतिबद्धता, गहरी मानसि कता की आवश्यकता होती है जो हमें लोकमानस व उसके सरल व्यवहार से पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुई है। दया, माया, करुणा, प्रेम, विश्व बंधुत्व के हमारे मूल्य, हमारी लोक कलाएं हमें बताती हैं। लोक कलाएँ सदा से जीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है यदि सुखी होकर वह मनोविनोद है तो परजन हिताय के अर्थ में सामाजिक उत्थान में अपना सर्वस्व योगदान प्रदान करने वाली है। लोककलाएँ हमारे सामाजिक जीवन में हमारी प्रसन्नता के मुख्य सूत्र रूप में दृष्टिगत होती है। उसका आधार देश की संस्कृति, सभ्यता परंपरा, सामाजिक जीवन और लोकमानस होता है। मधुबनी चित्रकला, फंड शैली, तंजौर शैली,

कालीघाट चित्र, लघु चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, इन सबमें जन कला के संवाद को महसूस किया जा सकता है। भारतीय जीवन में लोक-कला आंगन से लेकर घर की दीवारों, द्वार से चौपालों, रस्मों से लेकर रिवाजों तक फैली है। और तो और घर की लड़कियों के लिए महिलाओं के लिए सौंदर्य व शृंगारिक भावनाओं को प्रकट करने का माध्यम, बूढ़ी स्त्रियों के लिए परलोक सँवारने का यंत्र हो जाती है।

लोककला में जीवन का प्रवाह होता है और भावों की रोचकता भी लोक-कलाकार के व्यक्तित्व से साक्षात्कार हो जाता है लोककला का धार्मिक पक्ष अत्यंत प्रबल है। प्राचीन लोक कला से आधुनिक लोक कला तक एक धार्मिक पक्ष है, जो बदला नहीं है। लोक कला हमारे समाज की धारा है जो हमेशा प्रचलित होती रहेगी।